संगतकार

कविता का सार / प्रतिपाद्य

इस कविता में संगतकार के महत्व को दर्शाया गया है। संगतकार मात्र संगीत के क्षेत्र में नहीं हर क्षेत्र में विद्यमान है। किसी व्यक्ति की सफलता के पीछे कई लोगों का योगदान होता है। हम कभी उन लोगों को नहीं देख पाते हैं। कवि ने इस कविता के माध्यम से उन्हीं लोगों के योगदान को दर्शाया है। गायन के क्षेत्र का उदाहरण देकर वह संगतकार की भूमिका को बहुत अच्छी तरह से व्यक्त करता है और लोगों को सोचने पर विवश कर देता है।

संगतकार की भूमिका / गायन के क्षेत्र में उसके द्वारा दी जाने वाली सहायता / योगदान

- निस्वार्थ योगदान।
- मुख्य गायक के साथ मिलकर गाना।
- अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से कम रखना।
- जटिल तानों को गाते समय मुख्य गायक के गायन को संभालना।
- मुख्य गायक द्वारा सुर भटकने पर उसके सुर में सुर मिलाकर संभालना।

कविता का उद्देश्य

- संगतकार के महत्व को उजागर करना।

कविता से प्राप्त शिक्षाएँ / संदेश

- परोपकार की भावना को बल देने का संदेश।
- दूसरों के योगदान का सम्मान करने का संदेश।
- सबके साथ सहयोग की भावना को बल देने का संदेश।